अध्याय - 5

निष्कर्ष व शोध सार

इस अनुसधान मे किसी निष्कर्ष तक पहुँचने के पूर्व यह स्पष्ट कर देना उचित होगा कि शोध कार्य से उपलब्ध तथ्य अतिम नही है । क्योकि यह लघु शोध कार्य है, जिसमे सीमित क्षेत्र के छोटे से न्यादर्श का उपयोग किया गया है । न्यादर्श के सकलन एव विश्लेषण करने के पश्चात् यह निष्कर्ष प्राप्त किये गये ।

परिकल्पनाओ का विश्लेषण -

प्रथम परिकल्पना के सत्यापन से यह स्पष्ट है कि प्राथमिक स्तर पर दृष्टिहीन और सामान्य विद्यार्थियो की शैक्षणिक समेकन सबधी धारणा मे अतर नही पाया गया । यह आशाजनक परीणाम की प्राप्ति है । दृष्टिहीन और सामान्य विद्यार्थियो की शैक्षणिक समेकन सबधी धारणा का सकारात्मक होनेके कारण उनका साथ–साथ शिक्षा प्राप्त करना हो सकता है यदि उनका आपस मे सम्पर्क ही न हो तो उनके विचारो मे सकारात्मक ही प्राप्त न होगी । अर्थात दृष्टिहीन विद्यार्थियो के शैक्षणिक समेकन का मध्यमान 2 55 तथा सामान्य विद्यार्थियो का मध्यमान 2 36 है । अत सार्थक नही पाया गया ।

(2) **द्वितीय परिकल्पना** -

द्वितीय परिकल्पना के सत्यापन से यह स्पष्ट है कि दृष्टिकोण और सामान्य विद्यार्थियो की सामाजिक समेकन सबधी धारणा मे कोई अतर नही पाया गया । दृष्टिहीन विद्यार्थियो का मध्यमान 10 66 और सामान्य विद्यार्थियो का मध्यमान 10 पाया गया । इस प्रकार दृष्टिहीन विद्यार्थियो की तुलना मे सामान्य विद्यार्थियो का मध्यमान कम है । दृष्टिहीन विद्यार्थी व सामान्य विद्यार्थी की अपेक्षा सामाजिक समेकन के पक्षधर है ।

सामान्यत यह माना जाता है कि दृष्टिहीन एव सामान्य विद्यार्थियो की सामाजिक समेकन मे अतर पाया जाता है । किन्तु सामाजिक समेकन की धारणा मे अतर नही पाया गया । जिससे विद्यालय मे दृष्टिहीन और सामान्य विद्यार्थी की सामाजिक समेकन की धारणा से दृष्टिहीन विद्यार्थी का सामाजिक समेकन मानते है ।

(3) **तृतीय परिकल्पना** -

तृतीय परिकल्पना के सत्यापन से स्पष्ट है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर दृष्टिहीन और सामान्य विद्यार्थियो की शैक्षणिक समेकन सबधी धारणा मे अतर नही पाया गया । दृष्टिहीन विद्यार्थियो का मध्यमान 3 33 तथा सामान्य विद्यार्थियो का मध्यमान 2 42 पाया गया है । यद्यपि दोनो मे यह अतर सार्थक नही होते हुये भी सार्थक अतर है । इसका कारण यह हो सकता है कि दृष्टिहीन विद्यार्थी सामान्य विद्यार्थियो के साथ

अध्ययन करने के अधिक इच्छुक है ।

दृष्टिहीन विद्यार्थियो का औसत अधिक होने का कारण प्रथम वे अपनी दृष्टिहीनता को शिक्षा मे बाधक नही मानते । द्वितीय चलाई गई समेकित शिक्षा प्रणाली मे शैक्षणिक समेकन अधिक पाते हैं । सामान्य विद्यार्थियो की शैक्षणिक समेकन कीधारणा दृष्टिहीन विद्यार्थियो के प्रति कम होने के बावजूद दृष्टिहीन विद्यार्थि विद्यालय मे अपना शैक्षणिक समेकन मानते है।

चतुर्थ परिकल्पना -

चतुर्थ परिकल्पना के सत्यापन से यह स्पष्ट होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर दृष्टिहीन व सामान्य विद्यार्थी के सामाजिक समेकन की धारणा मे कोई सार्थक अतर नही पाया गया । उपरोक्त परिणाम समेकित शिक्षा के प्रति सफल परिणाम को प्रस्तुत करते है । दृष्टिहीन विद्यार्थियो के सामाजिक समेकन की धारणा का मध्यमान 12 तथा सामान्य विद्यार्थियो की सामाजिक समेकन की धारणा का मध्यमान 10 14 पाया गया । उक्त परिणाम से स्पष्ट है कि दृष्टिहीन और सामान्य दोनो विद्यार्थियो के औसत मे सार्थक अतर नही है ।

सामाजिक सस्कृति मानव मात्र की सहायता को परिलक्षित करती है । अत सस्कृति का प्रभाव भी दृष्टिहीन और सामान्य विद्यार्थियो पर हो सकता है । दृष्टिहीन और सामान्य विद्यार्थियो मे शिक्षको के व्यवहार व निर्देशन के कारण भी सामाजिक समेकन की धारणा सकारात्मक हो सकती है ।

(5) **पचम परिकल्पना** -

पचम परिकल्पना के सत्यापन से यह स्पष्ट होता है कि प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर पर दृष्टिहीन विद्यार्थियो मे शैक्षणिक समेकन सबधी धारणा मे कोई अतर नही पाया गया । प्राथमिक स्तर के दृष्टिहीन विद्यार्थियो का मध्यमान 2 42 तथा उच्च प्राथमिक स्तर पर दृष्टिहीन विद्यार्थियो से कम है । इसका कारण यह हो सकता है कि दृष्टिहीन विद्यार्थी व सामान्य विद्यार्थी साथ–साथ पढ रहे है। यद्यपि स्तरो के कारण दृष्टिहीन विद्यार्थियो की शैक्षणिक समेकन सबधी धारणा मे सकारात्मकता पाई गई ।

(6) **षष्ठम परिकल्पना** -

इस परिकल्पना के सत्यापन से यह स्पष्ट होता है कि प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर के दृष्टिहीन विद्यार्थियो मे सामाजिक समेकन की धारणा मे अतर नही पाया गया । प्राथमिक स्तर के दृष्टिहीनो से उच्च प्राथमिक स्तर के दृष्टिहीनो मे मे समेकित समेकन सबधी धारणा के प्रति समेकन के इच्छुक है ।

प्राथमिक स्तर के दृष्टिहीन विद्यार्थियो का मध्यमान 10 66 है । तथा उच्च प्राथमिक स्तर के दृष्टिहीन विद्यार्थियो के सामाजिक समेकन की धारणा का मध्यमान 12 है । अत हम कह सकते है कि सचार माध्यम की प्रगति से उनमे जाग्रती आई ।

(7) **सप्तम परिकल्पना** -

सप्तम परिकल्पना के सत्यापन से यह स्पष्ट होता है कि प्राथमिक स्तर और उच्च प्राथमिक स्तर के सामान्य विद्यार्थियो की शैक्षणिक समेकन की धारणा मे अतर नही पाया गया । क्योकि उनमे समाज व परिवार के परिवर्तनकारी दृष्टिकोण का प्रभाव रहा होगा । तथा शिक्षको का दृष्टिकोण ही उन पर प्रभाव डालेगा ।

(8) **अष्ठम परिकल्पना** -

अष्टम परिकल्पना के सत्यापन से यह स्पष्ट होता है । कि प्राथमिक स्तर के सामान्य विद्यार्थियो की सामाजिक समेकन की धारणा तथा उच्च प्राथमिक स्तर केसामान्य विद्यार्थियो की सामाजिक समेकन की धारणा मे अतर नही पाया गया । यह भी सचार माध्यमो तथा समाज व शिक्षको के दृष्टिकोण ने प्रभावित किया ।

अवलोकन सारणी का निष्कर्ष -

अवलोकन सारणी के प्रश्नो के आधार पर प्रश्नावली (लिखित प्रतिकिया) दृष्टिहीन विद्यार्थी के प्रति सकारात्मक है । इसमे सभी लोगो को शामिल किया गया है अर्थात जिन लोगो से प्रश्नावलियॉ भरवायी गयी है । उन विद्यार्थियो तथा 6 शिक्षक/ शिक्षिका तथा प्रधानाचार्य को शामिल कर 44 प्रतिदर्श होते है ।

अवलोकन सारणी के प्रश्नो के आधार पर साक्षात्कार (मौखिक प्रतिकिया) दृष्टिहीन विद्यार्थियो के प्रति सकारात्मक है । इसमे 24 विद्यार्थियो से ही साक्षात्कार (मौखिक प्रतिकिया) ली गई है । जिनसे विद्यालय मे दृष्टिहीन विद्यार्थियो के प्राति समेकन की धारणा पाई गई है ।

अवलोकन सारणी -

अवलोकन सारणी के प्रश्नो के आधार पर अवलोकन (व्यवहारगत) प्रतिकिया दृष्टिहीन विद्यार्थियो के प्रति समेकन की धारणा सकारात्मक पाई गई । इसमे 36 बार से प्रतिकिया अवलोकनकर्ताओ द्वारा ली गई ।

जहॉ एक ओर व्यवहार मे दृष्टिहीन विद्यार्थियो के प्रति समेकन की

धारणा उतनी सकारात्मक नही पाई गई जिनती की होनी चाहिए ।

शिक्षक / शिक्षिका -

शिक्षक / शिक्षिकाओ तथा प्रधानाचार्य से भी दृष्टिहीन विद्यार्थियो के प्रति धारणा सकारात्मक पाई गई है । शिक्षक / शिक्षिका तथा प्रधानाचार्य भी दृष्टिहीन विद्यार्थियो केलिए चलाई गई समेकित शिक्षा प्रणाली के पक्षधर है ।

प्रधानाचार्य -

प्रधानाचार्य भी समेकित शिक्षा प्रणाली केपक्षधर है तथा वे दृष्टिहीन विद्यार्थियो को अपने विद्यालय मे समेकन मानते है । तथा प्रशासन से भी इस विषय मे चर्चा करते है ।

शोध-सार

वर्तमान परिवर्तनकारी,प्रगतिशील एव विशेषकर वैज्ञानिक युग मे दृष्टिकोण को भी वातावरणीय प्रभावो ने प्रभावित किया है । इसके साथ ही माता–पिता अभिभावक एव समाज की अभिवृति मे भी अतर आया है इसके अतिरिक्त अन्य जॉचो के आधार पर भी ये तथ्य सामने आये है कि दृष्टिहीन औसत दृष्टि से सामान्य से नीचे का ही होता है, औसत स्तर अन्य विकलागो की तुलना मे अच्छा होता है । कतिपय तीव्र बुद्धि या प्रतिभा–सम्पन्न भी कहे जा सकते है ।

समाज यह अनुभव करने लग गया है कि प्रत्येक दृष्टिहीन को उसकी क्षमता एव आवश्यकता के अनुसार शिक्षा मिलनी चाहिए । विद्यालय इस बात का सहज ही परीक्षण कर सकते है कि किस प्रकार के बालक सामान्य विद्यालय मे अध्ययन हेतु प्रवेश पा सकते है एव अन्ध–विद्यालयो (दृष्टिहीन–विद्यालय) मे किस प्रकार के दृष्टिहीन बालकों को आवासीय सुविधा सहित प्रवेश देना उपयुक्त होगा ।शिक्षा अनिवार्य दायित्व है जिसे समाज बालको को प्रत्येक अवस्था मे एव प्रत्येक प्रकार के बालको को सुलभ कराना चाहिये । उन्हे अति–सरक्षण मे रखना उनके आगिक विकास मे बाधक है अत समेकन, समेकित शिक्षा के द्वारा ही दृष्टिहीनो का भविष्य उज्जवल होगा ।

प्रस्तुत शोध कार्य मे यह जानने का प्रयास किया है, विद्यालय मे दृष्टिहीन विद्यार्थियो की समेकन की क्या स्थिति है ।

अत शोध कार्य हेतु इस समस्या का चयन किया गया ।

समस्या कथन –

'दृष्टिहीन विद्यार्थियो के समेकन का अध्ययन'

शोध-उददेश्य -

इस शोध के निम्नलिखित उद्देश्य है ।

1 सामान्य विद्यार्थियो से विद्यालय मे दृष्टिहीन विद्यार्थियो मे के समेकन की स्थिति ज्ञात करना ।

2 दृष्टिहीन विद्यार्थियो से विद्यालय मे उनके समेकन की स्थिति ज्ञात करना।

3 शिक्षको से विद्यालय मे दृष्टिहीन विद्यार्थियो के समेकन की स्थिति ज्ञात करना ।

4 विद्यालय के प्रधानाचार्य से दृष्टिहीन विद्यार्थियो के समेकन की स्थिति ज्ञात करना ।

5 विद्यालय मे अवलोकन प्रपत्र के द्वारा दृष्टिहीन विद्यार्थीयो की समेकन की स्थिति ज्ञात करना ।

शोध–प्रश्न –

1 क्या विद्यालय मे दृष्टिहीन विद्यार्थियो का समेकन है।

2 क्या दृष्टिहीन विद्यार्थियो की शिक्षा के लिए अतिरिक्त सुविधाएँ प्रदान की जाती है ।

शोध–चर –

(1)	स्वतत्र चर	–	(2) आश्रित चर
(1)	स्वतत्र चर	–	(1) विद्यार्थी (2) स्तर
(1)	विद्यार्थी	–	दृष्टिहीन विद्यार्थी, सामान्य विद्यार्थी
(2)	स्तर	–	प्राथमिक स्तर, उच्च प्राथमिक स्तर
(2)	समेकन	–	शैक्षणिक और सामाजिक

शोध-परिकल्पनाएँ -

शोध परिकल्पनाएँ निम्न है –

1 प्राथमिक स्तर पर दृष्टिहीन विद्यार्थियो और सामन्य विद्यार्थियो की शैक्षणिक समेकन सबधी धारणा मे कोई अतर नही होता।

2 प्राथमिक स्तर पर दृष्टिहीन विद्यार्थियो और सामान्य विद्यार्थियो की सामाजिक समेकन सबधी धारणा मे कोई अतर नही होता।

3 उच्च प्राथमिक स्तर पर दृष्टिहीन और सामान्य विद्यार्थियो की शैक्षणिक समेकन सबधी धारणा मे कोई अतर नही होता।

4 उच्च प्राथमिक स्तर पर दृष्टिहीन और सामान्य विद्यार्थियो की सामाजिक समेकन सबधी धारणा मे कोई अतर नही होता ।

5 प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर पर दृष्टिहीन विद्यार्थियो मे शैक्षणिक समेकन सबधी धारणा मे कोई अतर नही होता ।

6 प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर पर दृष्टिहीन विद्यार्थियो में सामाजिक समेकन सबधी धारणा मे कोई अतर नही होता ।

7 प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर पर सामान्य विद्यार्थियो मे शैक्षणिक समेकन सबधी धारणा मे कोई अतर नही होता ।

8 प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर पर सामान्य विद्यार्थियो मे सामाजिक समेकन सबधी धारणा मे कोई अतर नही होता ।

न्यादर्श .-

इस शोध कार्य मे न्यादर्श का चयन सोद्देशीय विधि तथा सुविधानुसार विधि द्वारा किया गया । इस शोध कार्य मे म0प्र0 के भोपाल शहर के एक ही शासकीय विद्यालय शा0 बालक मा0विद्यालय,भेल,बरखेडा को लिया गया । इस विद्यालय से 37 विद्यार्थियो का चयन जिनमे 12 दृष्टिहीन तथा 25 सामान्य विद्यार्थियो का चयन किया गया ।

उपकरण -

इस शोध कार्य मे निम्नलिखित उपकरणो का उपयोग किया गया –

(1) दृष्टिहीन विद्यार्थी के लिए प्रश्नावली,
(2) सामान्य विद्यार्थी के लिए प्रश्नावली,
(3) दृष्टिहीन विद्यार्थी के लिए साक्षात्कार,
(4) सामान्य विद्यार्थी के लिए साक्षात्कार,
(5) शिक्षक/शिक्षिका के लिए प्रश्नावली,
(6) अवलोकन सारणी,

प्रयुक्त साख्यिकीय -

इस शोध कार्य मे साख्यिकी निम्न है –

(1) मध्यमान,
(2) प्रमाप–विचलन,
(3) 'टी' परीक्षण,

सीमाएँ -

इस शोध कार्य की सीमाएँ निम्नलिखित है –

1 यह शोध कार्य म0प्र0 राज्य के भोपाल नगर तक ही सीमित है ।

2 इस शोध कार्य मे एक शासकीय विद्यालय 'शा0बालक मा0 भेल,बरखेडा को लिया गया है ।

3 इस शोध कार्य मे शिक्षा के प्राथमिक स्तर कक्षा (1 से 5) तथा उच्च प्राथमिक स्तर कक्षा (6 से 8) को शामिल किया गया ।

4 इस शोध कार्य मे न्यादर्श 37 विद्यार्थी है ।

5 इस शोध कार्य मे समेकन के अतर्गत शैक्षणिक एव सामाजिक समेकन की धारणा को लिया गया है ।

निष्कर्ष - जहॉ तक सभव हो सके दृष्टिहीन विद्यार्थियो को सामान्य विद्यार्थियो के साथ ही शिक्षा प्रदान करनी चाहिए । विद्यालय द्वारा प्रदत सभी शिक्षण विषय आदि की व्यवस्था दृष्टिहीन के लिए भी हो । अन्य बालको की और से प्राप्त सहानुभूति उनमे विश्वास एव लगन उत्पन्न करेगी जिनसे व अपने आपको विद्यालय की सयुक्त इकाई के रूप मे अनुभव करेगे ।

शोध का प्रभाव -

(1) सामान्य दृष्टिहीन विद्यार्थियो केसकारात्मक सबधो मे वृद्धि होगी ।

(2) विद्यालय मे व शिक्षको मे दृष्टिहीन विद्यार्थियो के प्रति जाग्रति आएगी ।

(3) दृष्टिहीन बच्चो के प्रति समाज के दृष्टिकोण मे परिवर्तन होगा ।

सीमाएँ -

इस अध्ययन की निम्नलिखित सीमाऐ थी –

(1) भौगोलिक दृष्टि से म0प्र0 राज्य के भोपाल नगर तक ही यह शोध कार्य सीमित है ।

(2) शोध मे 37 विद्यार्थियो को न्यादर्श के रूप मे लिया गया है ।

(3) भोपाल नगर के एक ही शासकीय विद्यालय तक सीमित है ।

(4) प्रदतो के विश्लेषण मे साख्यिकी विधि का प्रयोग प्रदतो के अनुसार किया गया ।

भावी शोध हेतु सुझाव -

भविष्य मे शोध हेतु कुछ प्रस्तावित समस्याए अध्ययन के लिए लीजा सकती है । क्योकि भारत मे समेकन (समेकित शिक्षा) को उचित स्थान नही मिल पाया है इस दिशा मे शोध–कर्ता के अनुसार भावी शोध हेतु कुछ महत्वपूर्ण समस्याए इस प्रकार है –

(1) नगरीय व ग्रामीण क्षेत्र मे समेकन शिक्षा केप्रति विद्यार्थियो की अधिवृति या चेतना का अधिक जागरूकता ।

(2) शिक्षको का समेकन शिक्षा समेकित शिक्षा के प्रति अभिवृति अध्ययन ।

(3) समेकन का विद्यार्थी के शैक्षिक स्तर पर प्रभाव ।

(4) प्रशिक्षित व अप्रशिक्षित शिक्षको का समेकन के प्रति धारणा का अध्ययन ।

(5) समेकन का दृष्टिहीन विद्यार्थी के जीवन मे समेकन ।